भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

लोक सभा
तारांकित प्रश्न सं. 256*

दिनांक 10 जुलाई, 2019 को उत्तर दिए जाने के लिए

वाणिज्य–वस्तु और सेवाओं का निर्यात लक्ष्य

*256. **डॉ॰ संजय जायसवालः**

क्या वाणिज्य और उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या विदेश व्यापार नीति 2015–20 के अनुसार वर्ष 2020 तक 900 बिलियन अमेरिकी डॉलर के वाणिज्य–वस्तु और सेवाओं के निर्यात का लक्ष्य प्राप्त करने में कोई विलंब हुआ है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसके क्या कारण हैं; और

(ग) लक्ष्य को प्राप्त करने में अब तक क्या प्रगति हुई है?

उत्तर
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री
(श्री पीयूष गोयल)

(क) से (ग): विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

*****

"वाणिज्य–वस्तु और सेवाओं का निर्यात लक्ष्य" के संबंध में दिनांक 10 जुलाई, 2019 को पूछे जाने वाले लोकसभा तारांकित प्रश्न सं. 256 के भाग (क) से (ग) के उत्तर में संदर्भित विवरण

(क) से (ग): विदेश व्यापार नीति 2015–20 के अनुसार, सरकार का भारत के व्यापारिक वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात को 465.9 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़ाकर वर्ष 2019–20 तक लगभग 900 बिलियन अमरीकी डॉलर करने तथा विश्व निर्यात (वस्तुओं एवं सेवाओं) में भारत के हिस्से को 2 प्रतिशत से बढ़ाकर 3.5 प्रतिशत करने का लक्ष्य है। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) अनुमानों के अनुसार वर्ष 2017 में विश्व निर्यात (वस्तुओं एवं सेवाओं) में भारत का हिस्सा बढ़कर 2.1 प्रतिशत हो गया है। गत 4 वर्षों के दौरान भारत के समग्र निर्यात (व्यापारिक वस्तुएं एवं सेवाएं) का मूल्य निम्नानुसार है:–

(मूल्य बिलियन अमरीकी डालर में)

वर्ष	निर्यात	प्रतिशत परिवर्तन
2015–16	416.60	–––
2016–17	440.05	5.63
2017–18	498.63	13.31
2018–19*	538.07	791

स्रोतः डीजीसीआई एंड एस, और आरबीआई (*अनंतिम)

भारत के निर्यात को वैश्विक व्यापार स्थितियों और समग्र व्यापार इको–प्रणाली की पृष्ठभूमि देखा जाना चाहिए। वर्ष 2008–09 के विश्वव्यापी वित्तीय संकट जिसमें वर्ष 2013–14 के बाद और वृद्धि हो गई, जब वैश्विक अर्थव्यवस्था को व्यापार की भारी मंदी का सामना करना पड़ा, से उत्पन्न स्थितियों के कारण भारत के निर्यात को हाल के वर्षों में अत्यन्त चुनौतीपूर्ण समय का सामना करना पड़ा है। इसलिए, प्रारंभिक आघात से निकलकर सुधार हासिल करने के बाद दूसरे चरण में जब चीन जैसे देश भी प्रतिकुल रूप से प्रभावित हुए, वैश्विक आर्थिक/वित्तीय संकट में वृद्धि के कारण निर्यात पुनः भारी दबाव में आ गया। तथापि, उसके बाद से वर्ष 2016–17 से लगभग तीन वर्षों से निर्यात में दीर्घकालिक आधार पर वृद्धि हो रही है तथा कुल निर्यात पहली बार आधा ट्रिलियन डालर से अधिक की नई ऊंचाई पर पहुंच गया है।

****